जुलाई २०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

भक्ति

संपादकीय

बालमित्रों,

"भक्ति करता कदिए हुं थाकुं नहीं, एवी शक्ति द्यो"

- कविराज

भक्ति तो भगवान तक पहुँचने का सीधा मार्ग है। सच्ची भक्ति करनेवाले लोग बहुत ही बड़े दिलवाले होते हैं। और इसीलिए उनकी भक्ती भगवान तक पहुँचती ही है।

हमने मीराबाई, नरसिंह मेहता आदि भक्तों की कहानियाँ सुनी हैं। वे उच्च कोटि के भक्त माने जाते हैं। और कहा जाता है कि उनकी प्रार्थना भगवान सुनते थे। तो सोचने योग्य है कि उनकी भक्ति कैसी होगी!

परम पूज्य दादाश्री ने भक्ति के बारे में बहुत ही सुंदर समझाया है। तो आइए, इस अंक में हम सच्ची भक्ति कैसी होती है, सच्चे भक्त कैसे होते हैं यह दादा की वाणी से, साथ ही कुछ कहानियों के द्वारा समझते हैं और हम भी सच्ची भक्ति के रास्ते पर आगे बढ़ते हैं।

- डिम्पल मेहता

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : ३ अंक : ४
अखंड क्रमांक : २८
जुलाई २०१५

.....

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

भक्ति

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

दादाश्री : भक्ति यानी उस रूप ही बन जाना। भक्ति का स्वभाव कैसा है? जिस रूप की करोगे वैसे बन जाओगे। दादा की भक्ति करोगे तो उस रूप होते ही जाओगे। आत्मज्ञानी की भक्ति करने से वे आपको आत्मज्ञान तक ले जाएँगे।

नीरू माँ : ज्ञान और भक्ति हमेशा साथ ही होते हैं। जिनके लिए भक्ति उत्पन्न होती है उनका ज्ञान(समझ) पहले मिलता है। राम, कृष्ण या महावीर की भक्ति करते हैं तो पहले उनका जीवनचारित्र और उनकी दिव्यता आदि जाने, उसके बाद ही उनके प्रति भक्ति उत्पन्न होती है। ज्ञान जानने के बाद उनके प्रति भक्ति सहज ही उत्पन्न हो जाती है। जितनी मात्रा में ज्ञान होगा, उतनी ही मात्रा में भक्ति उत्पन्न होती जाएगी।

प्रश्नकर्ता : मैं भगवान की भक्ति करता हूँ, सत्संग करता हूँ लेकिन उसमें मेरा चित्त स्थिर नहीं रहता है।

दादाश्री : चित्त तो अच्छा ही है लेकिन हमें एडजस्ट करना नहीं आता। जैसे बैंक में गए हों और सौ-सौ के बंडल गिनने हों, तब चित्त स्थिर रहता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : रहता है।

दादाश्री : फ्रेन्ड आए तो उसे भी भूल जाएँ। इसका क्या कारण? पैसे पर उसे इन्ट्रस्ट (रुचि) है और भगवान में इन्ट्रस्ट नहीं। उनका महत्व समझ में नहीं आया हैं, इसलिए चित्त स्थिर नहीं रहता। जहाँ इन्टरेस्ट हो वहाँ चित्त स्थिर रहता है।

सच्चा भक्त बनना हो और शुरू में भगवान याद नहीं रहते हों तो मंदिर में जाओ, वहाँ भगवान के दर्शन करना। ऐसा करते-करते भगवान याद रहने लगेंगे, उसके बाद जब भीतर आत्मा को ही भगवान की तरह मानोगे, तब सच्चे भक्त बन जाओगे।

जानने

पाचँ इन्द्रियों से ईश्वर की प्राप्ति के लिए जो कुछ भी किया जाता है वह भक्ति है। भगवान को प्राप्त करने के लिए दो भक्ति मार्ग हैं : पहली परोक्ष भक्ति और दूसरी प्रत्यक्ष भक्ति। मूर्ति, फोटो आदि सभी परोक्ष भक्ति में आता है। परोक्ष भक्ति में वृत्तियाँ भगवान में स्थिर नहीं रहतीं।

१. "स्थापना" भक्ति - स्थापना यानी फोटो रखकर "महावीर" या "राम, राम" करें उसे "स्थापना" भक्ति कहते हैं।

मूर्ति द्वारा भक्ति!

मूर्ति क्यों रखते हैं? इसके पीछे क्या भावना है? भगवान "परमानेन्ट" सुखवाले हैं और हम "टेम्परेरी" सुखवाले हैं। हमें परमानेन्ट सुख की इच्छा है, इसलिए मूर्ति की भजना करते हैं। इसे परोक्ष भक्ति कहते हैं!

४. "भाव" भक्ति - ज्ञानी के कहे अनुसार करना, उनकी आज्ञा में रहना वह "भाव" भक्ति कहलाती है।

भाव भक्ति तुरंत फल देनेवाली है। पहली तीन प्रकार की भक्ति भौतिक फल देती है और सिर्फ आखिरीवाली भक्ति ही मोक्षफल देती है।

३. "नाम" भक्ति - "महावीर" या "राम" बोलना, जप करना उसे "नाम" भक्ति कहते हैं।

योग्य

प्रत्यक्ष भक्ति यानी जहाँ भगवान प्रकट हुए हैं, उनकी भक्ति (मतलब हाज़िर भगवान या ज्ञानी की भक्ति)। उससे मोक्ष मिलता है। प्रत्यक्ष भक्ति में वृत्तियाँ निरंतर भगवान में स्थिर रहती हैं।

प्रत्यक्ष भक्ति से भगवान मिलते हैं। परोक्ष भक्ति से धीरे-धीरे मोक्ष मार्ग में प्रगति होती है।

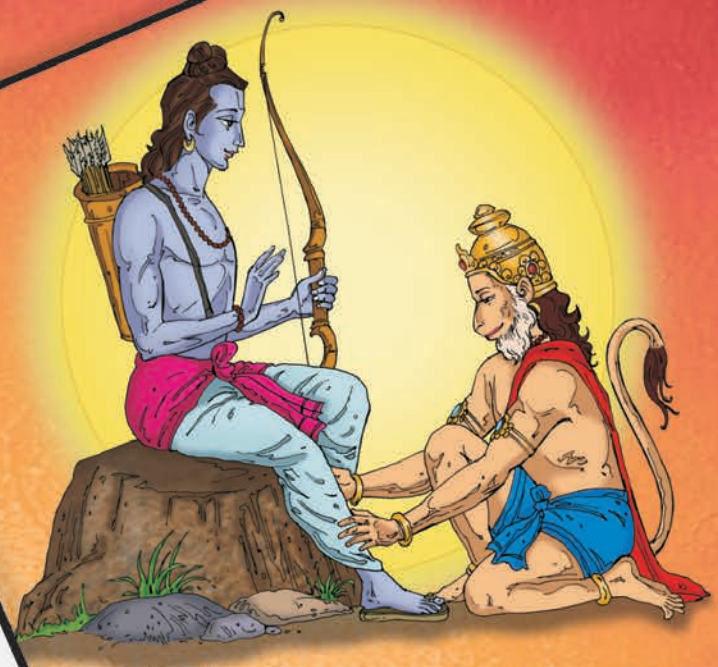

२. "द्रव्य" भक्ति - खुद महावीर या राम हाज़िर हों और उनकी भक्ति की जाए तो उसे "द्रव्य" भक्ति कहते हैं।

दादा का फोटो रखकर भक्ति करें, उसके बजाय वे खुद हाज़िर हों और उनकी हाज़िरी में भक्ति करें तो इसे "द्रव्य" भक्ति कहते हैं

यह तो नई

माताजी की भक्ति करने से प्रकृति सहज होती है और प्राकृत शक्ति उत्पन्न होती है।

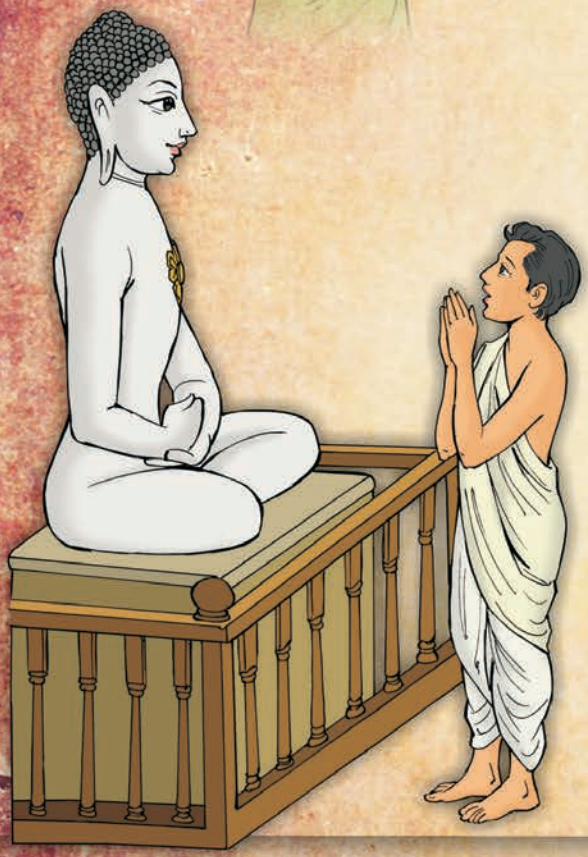

सच्चे दर्शन की रीति

भगवान से देरासर में जाकर कहना कि "हे वीतराग भगवान, आप मेरे भीतर ही विराजमान हों लेकिन मुझे आपकी पहचान नहीं हैं, इसलिए आपके दर्शन कर रहा हूँ। मुझे यह ज्ञानीपुरुष दादा भगवान ने सिखाया हैं। इसलिए इस तरह आपके दर्शन कर रहा हूँ, तो आप मुझे मेरी, "खुद" की पहचान हो सके ऐसी कृपा कीजिए"।

इस तरह सभी जगह दर्शन करने चाहिए।

ही बात !

भक्ति में लीन होकर तालियाँ बजाते हुए शरीर जितना ज्यादा हिलेगा-डुलेगा उतने ही भीतर के पाप बाहर निकल जाएँगे और भीतर ज्ञान भर जाएगा।

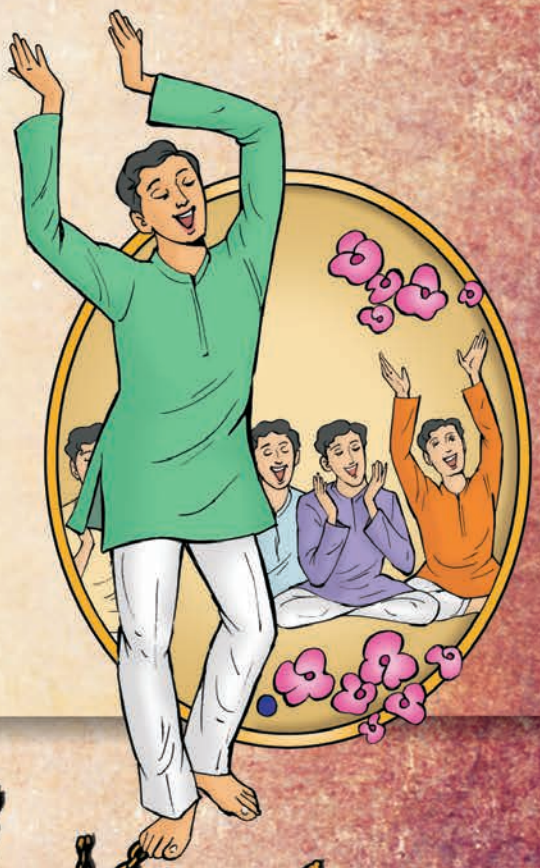

सच्ची भक्ति में भगवान के साथ एकता, अभेदता होती है। यदि भगवान से कुछ भी चाहिए, स्वार्थ हो तो वह लालचवाली भक्ति कहलाएगी। वहाँ भगवान पर प्रेम कैसे होगा?

सच्ची भक्ति

नारद जी, श्री कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे। हरि के प्रति उनकी भक्ति इतनी तीव्र थी कि वे ऐसा मानते थे कि उनके जैसा प्रगाढ़ (बड़ा) हरी भक्त और कोई है ही नहीं। भगवान श्री कृष्ण ने नारद जी के मन के भाव को पढ़ लिया। उन्होंने महर्षि का अभिमान तोड़ने का निश्चय किया।एक दिन,...

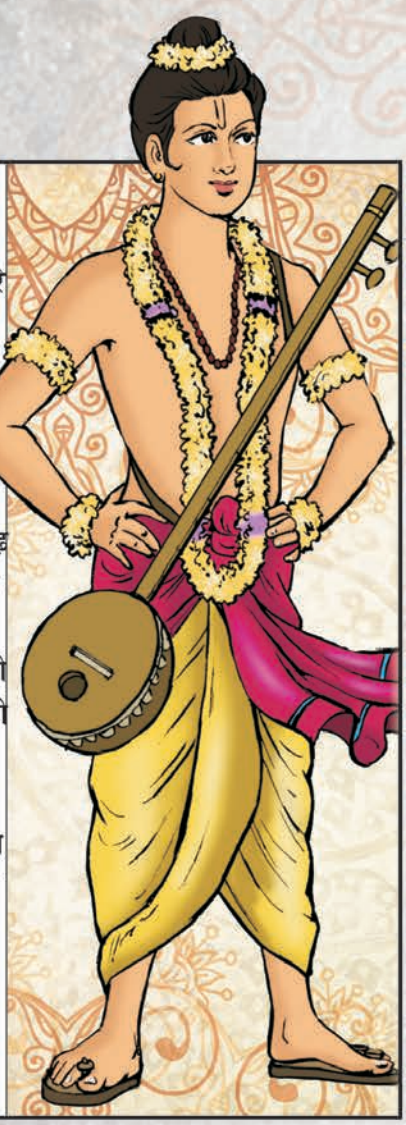

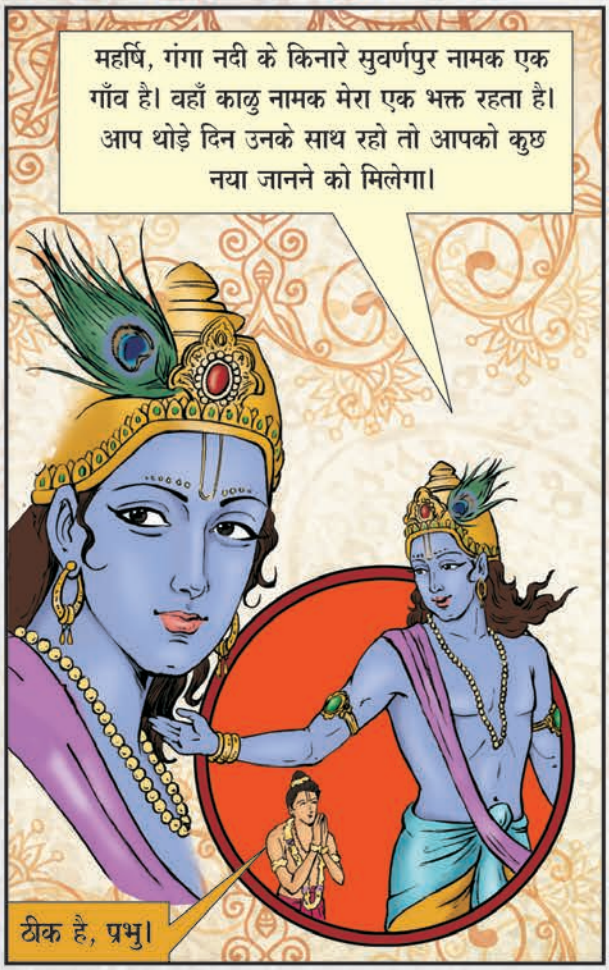

नारद जी, काळु के पास पहुँच गए और उनकी दिनचर्या देखने लगे। काळु सुबह जल्दी उठकर एक ही बार हरि का नाम लेता....

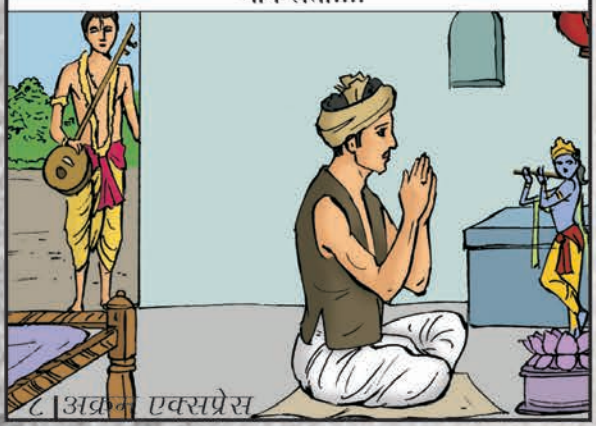

फिर हल लेकर खेत पर चला जाता। पूरे दिन खेत में काम करता...

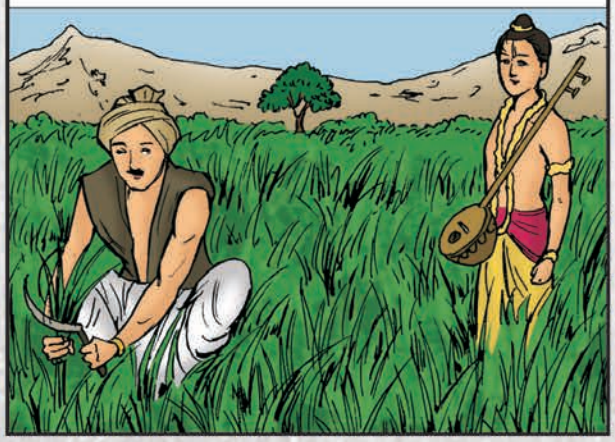

रात को सोते समय वापस एक बार वह हरि का नाम लेता।

हरि भक्त यानी क्या? यह गँवार क्या जाने? पूरे दिन में सिर्फ दो बार ही हरि को स्मरण करता है और पूरे दिन अपनी दुनियादारी के कामों में मग्न रहता है।

काळु के साथ एक दिन बिताकर, नारद जी तो हरि के पास वापस आ गए।

महर्षि, दूध से लबालब भरा हुआ एक प्याला लेकर, पूरे वैकुंठ की परिक्रमा करके वापस आओ। दूध की एक बूंद भी नीचे गिरनी नहीं चाहिए।

नारद जी उस अनुसार परिक्रमा करके वापस आए।

महर्षि, वैकुंठधाम की परिक्रमा करते हुए आपने कितनी बार मेरा स्मरण किया?

एक बार भी नहीं। आपका स्मरण किस तरह करता? दूध का प्याला छलक नहीं जाए और एक भी बूँद गिरे नहीं, इसलिए मेरा ध्यान हर समय दूध के प्याले पर ही था!
नारद जी, आपका पूरा ध्यान प्याले पर ही केंद्रित रहा इसलिए आप मुझे बिल्कुल ही भूल गए । अब उस किसान काळु को देखो...
अपने परिवार और संसार की ज़िम्मेदारियाँ संभालते हुए पूरा दिन वह काम में व्यस्त रहता है, मेहनत करता है। रोज़ यही क्रम चलता रहता है, फिर भी दिन में दो बार वह मेरा स्मरण करना नहीं भूलता। इसे ही सच्ची भक्ति कहते हैं।
नारद जी को प्रभु की बात समझ में आ गई कि भक्ति का अभिमान करना ठीक नहीं है।

हनुमान जी की भक्ति

जिनके प्रति भक्ति होती है उनका एक भी दोष नहीं देखना चाहिए।

जब प्रभु श्री राम वानर सेना के साथ लंका की तरफ जा रहे थे, तब रास्ते में समुद्र के ऊपर सेतु बंध बाँधना था। पूरी वानर सेना, हनुमान जी, सुग्रीव और बाकी के सभी वानर दिल से प्रभु का काम कर रहे थे। वे पत्थर पर "राम" लिखकर समुद्र में रखते तो पत्थर तैरने लगता और इस तरह उनका काम आसान हो रहा था।

ऐसे में एक रात को श्री राम को भी इस काम में योगदान देने की इच्छा हुई। वे समुद्र के किनारे की तरफ आगे बढ़े। हनुमान जी ने उन्हें समुद्र की तरफ जाते हुए देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ। उत्सुक्तापूर्वक प्रभु को पता न चले इस तरह वे उनके पीछे चलने लगे।

श्री राम ने एक पत्थर लेकर समुद्र में रखा तो वह डूब गया। उसके बाद दूसरा, तीसरा और बहुत से पत्थर रखे लेकिन सब डूब गए। हनुमान जी यह सब शांति से देख रहे थे।

इतने में प्रभु श्री राम की नज़र हनुमान जी पर पड़ी। उन्होंने हनुमान जी से पूछा, "आपने कुछ देखा?"

हनुमान जी ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, "हाँ प्रभु, आपके रखे हुए पत्थर समुद्र में डूब जाते हैं।"

श्री राम ने हनुमान जी से प्रश्न पूछा, "इस घटना पर से आपने क्या तय किया?"

हनुमान ने बहुत ही विनम्रता से जवाब दिया, "जिसका हाथ प्रभु राम छोड़ देते हैं, वह डूब जाता है और जिसके हृदय में "राम" लिख जाता है वह तैरने लगता है।"

इसे कहते हैं भक्ति!!

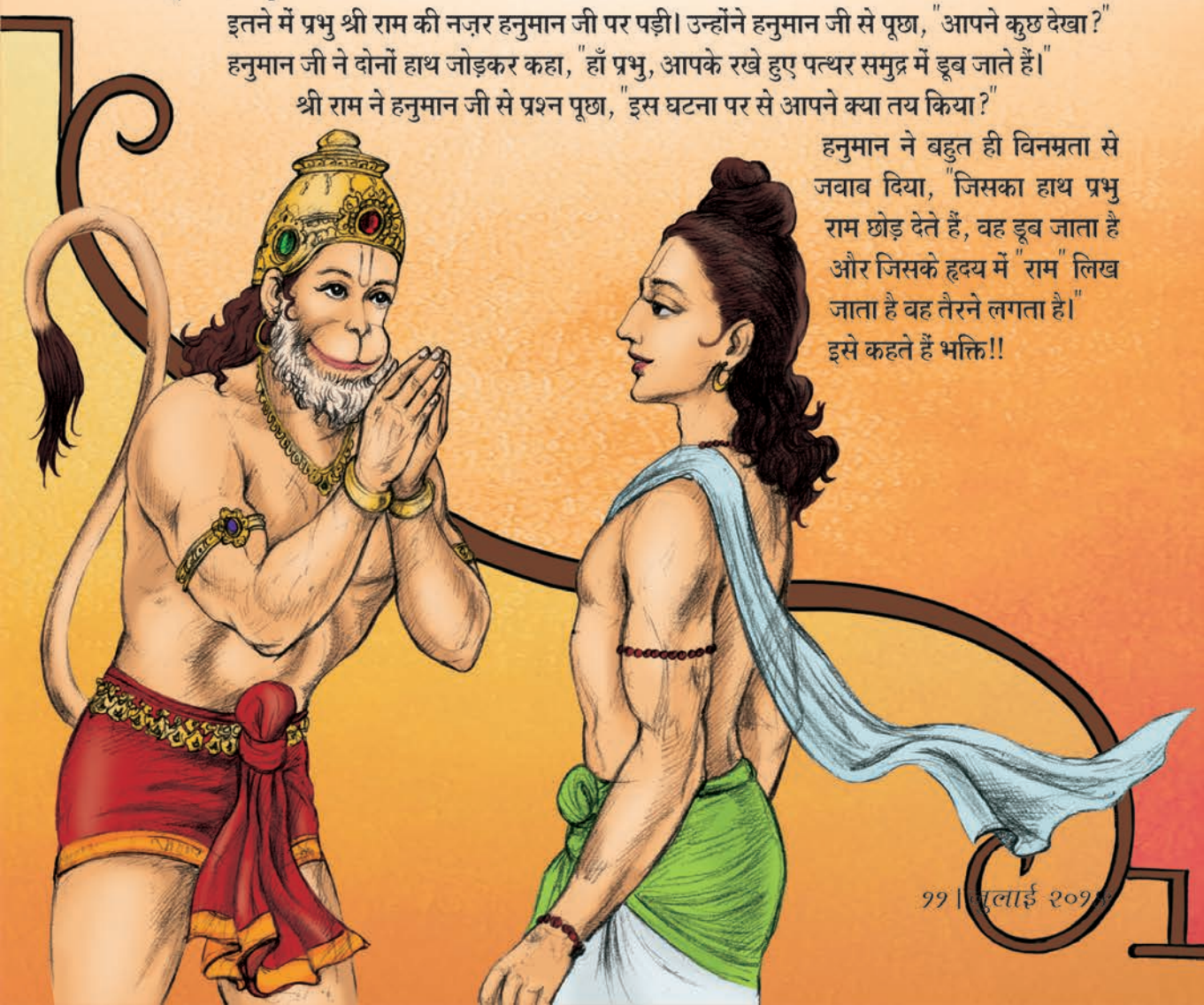

संत नामदेव की भक्ति

संत नामदेव का जन्म महाराष्ट्र के नरसीबामणी गावँ में दर्जी परिवार में हुआ था। उनके पिताजी दामासेठ, पंढरपुर स्थित विट्ठल जी की मूर्ति के उपासक थे। नामदेव भी बचपन से ही धर्म में रूचि रखते थे।

पूजा करते समय उनके पिता दामासेठ रोज़ विट्ठल जी की मूर्ति को दूध का भोग लगाते थे। एक दिन उन्हें व्यापार के काम से गाँव से बाहर जाना था। उन्होंने अपने पाँच साल के बेटे नामदेव को विट्ठल जी को भोग लगाने और पूजा करने की ज़िम्मेदारी सौंपी। अपनी बालबुद्धि अनुसार नामदेव ऐसा समझे कि मूर्ति, रोज़ पिता जी द्वारा रखे दूध को पी लेती होगी।

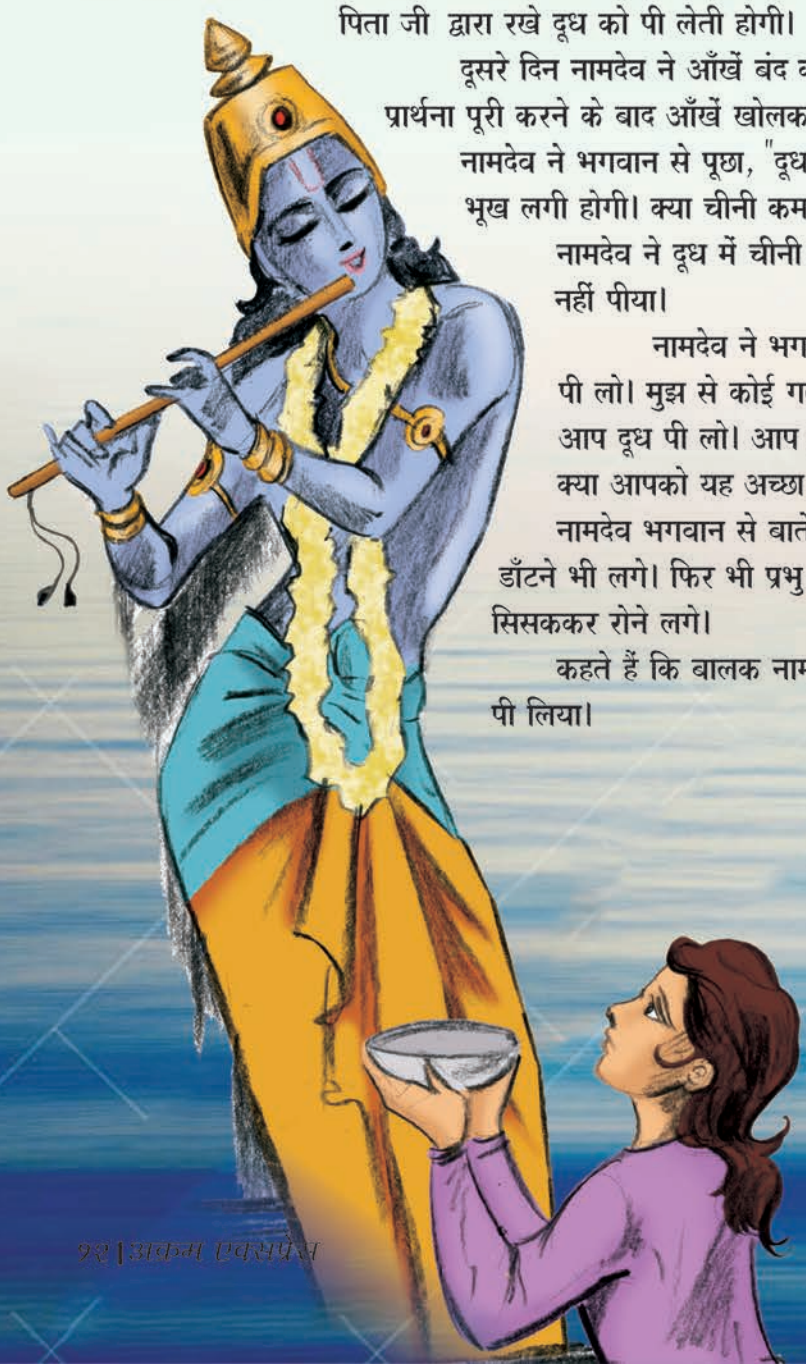

दूसरे दिन नामदेव ने आँखें बंद करके विट्ठल जी से दूध पीने की प्रार्थना की। प्रार्थना पूरी करने के बाद आँखें खोलकर देखा तो दूध वैसे का वैसा ही था।

नामदेव ने भगवान से पूछा, "दूध क्यों नहीं पीते? जल्दी दूध पीओ। आपको भूख लगी होगी। क्या चीनी कम है? दूध मीठा नहीं है?"

नामदेव ने दूध में चीनी डाल दी, लेकिन फिर भी विट्ठल जी ने दूध नहीं पीया।

नामदेव ने भगवान से वापस प्रार्थना की, "विट्ठल जी, दूध पी लो। मुझ से कोई गलती हुई हो तो मुझे क्षमा करो, लेकिन आप दूध पी लो। आप दूध नहीं पीओगे तो पिता जी मुझे मारेंगे। क्या आपको यह अच्छा लगेगा?"

नामदेव भगवान से बातें करने लगे। उन्हें मनाने लगे। गुस्सा होकर डाँटने भी लगे। फिर भी प्रभु ने दूध नहीं पीया। थोड़ी देर बाद वे सिसक-सिसककर रोने लगे।

कहते हैं कि बालक नामदेव की भक्ति को वश होकर मूर्ति ने दूध पी लिया।

मित्रों, यह तो आश्चर्य की बात है न? लेकिन सच्चीभक्ति से भगवान ज़रूर प्रसन्न होते हैं।

भक्ति तारे, शंका डुबाए

महासागर को पार करने के लिए एक व्यक्ति विभीषण से सहायता माँगने के लिए आया। भगवान राम का नाम एक पत्ते पर लिखकर विभीषण ने कहा, "भाई, बिल्कुल घबराना नहीं। मैं तुम्हारे कपड़ों के साथ एक चीज़ बाँध देता हूँ। उसकी सहायता से तुम समुद्र पार कर जाओगे। श्रद्धा रखना। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, यदि आपकी श्रद्धा टूट जाएगी तो आप डूब जाओगे।

विभीषण के कहे अनुसार वह व्यक्ति समुद्र पार कर रहा था। अचानक उसे अपने कपड़ों के साथ बंधी हुई चीज़ को देखने की उत्सुकता हुई।

कपड़ा खोलकर देखा तो एक पत्ते पर भगवान राम का नाम लिखा था।

"यह क्या? यह तो सिर्फ भगवान राम का नाम है! भगवान का नाम क्या कर सकेगा?"

जैसे ही उसके मन में शंका उठी कि तुरंत वह डूब गया।

देखा मित्रो, भक्त की श्रद्धा और भक्ति, भक्त को तार देती है लेकिन शंका उसे डूबो देती है।

आज्ञा का आराधन ही भक्ति!

गुरु गोबिंदसिंह जी के समय की बात है। भाई बेल्ला नामक एक सरल किसान गुरु गोबिंदसिंह जी के पास आया और सेवा की माँग की।

"भाई, तुझे किस तरह की सेवा करनी है?" गुरु ने भाई बेल्ला से पूछा।

"प्रभु, मैं आपके तबेले में काम करूँगा और आपके घोड़ों की रखवाली करूँगा" भाई बेल्ला ने नम्रता से अपना भाव प्रकट किया।

गुरु जी ने मंजूरी दे दी और उस दिन से भाई बेल्ला बहुत ही निष्ठा से तबेले में काम करने लगे।

घोड़ों की अच्छी देखभाल से दो-तीन महीनों में तो उनकी सेहत बहुत सुधर गई। एक दिन गुरु गोबिंदसिंह जी तबेले के पास से पसार हुए। घोड़ों की तंदुरुस्ती देखकर वे बहुत प्रभावित हुए।

"घोड़ों की सुंदर तंदुरुस्ती के लिए कौन ज़िम्मेदार है?" गुरु जी ने पूछा।

"भाई बेल्ला ," गुरु जी के एक शिष्य ने कहा।

गुरु जी , भाई बेल्ला की निष्ठा पर से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने भाई बेल्ला से उनकी पढ़ाई के बारे में पूछा।

"प्रभु, मैं तो कभी स्कूल गया ही नहीं," भाई बेल्ला ने कहा।

"आज से मैं तुम्हें पढ़ाऊँगा," कहकर उन्होंने भाई बेल्ला की पढ़ाई की ज़िम्मेदारी ले ली।

और उसके बाद वे हर रोज़ सुबह भाई बेल्ला को एक वाक्य देते। पूरे दिन भाई बेल्ला बहुत ही निष्ठापूर्वक उस वाक्य का रटन करते।

एक दिन भोर के समय गुरु जी किसी खास काम से बाहर जा रहे थे। बेल्ला ने गुरु जी को घोड़े पर सवार

होकर बाहर जाते हुए देखा। वह तुरंत गुरु जी के पास पहुँचा और वाक्य माँगा।

"भाई, तुम्हें समझ में नहीं आता कि यह योग्य समय नहीं है। देखते नहीं हो कि मैं बाहर जा रहा हूँ?" गुरु जी ने बेल्ला को टोका और अपने काम से निकल गए।

भाई बेल्ला को ऐसा समझ में आया कि उन्हें (गुरु ने टोका वह) वाक्य मिल गया है और वह निष्ठापूर्वक उस वाक्य का रटन करने लगे।

गुरु जी के अन्य शिष्यों ने जब यह देखा, तब उन्होंने भाई बेल्ला का बहुत मज़ाक उड़ाया। जब शाम को गुरु जी वापस आए, तब एक शिष्य ने गुरु जी से पूछा, "साहब, आज आपने भाई बेल्ला को कौन सा वाक्य दिया था?"

गुरु ने कहा कि उन्होंने कोई भी वाक्य नहीं दिया था।

लेकिन साहब वह तो आज पूरे दिन एक वाक्य का रटन कर रहा था कि 'भाई, तुम्हें समझ में नहीं आता कि यह योग्य समय नहीं है। देखते नहीं हो कि मैं बाहर जा रहा हूँ?'

उस शिष्य का इरादा तो भाई बेल्ला को नीचा दिखाने का था। लेकिन यह सुनकर गुरु गोबिंदसिंह जी बहुत खुश हुए और बोले, "ऐसी सरल व्यक्ति कि जो गुरु की आज्ञा का पालन करते समय बुद्धि को बीच में नहीं लाता, वही कृपा पात्र बनकर ज्ञान प्राप्त करता है। गुरु की आज्ञा का आराधन ही सच्ची भक्ति है।"

और उसी समय भाई बेल्ला को गुरु की कृपा का अनोखा अनुभव हुआ। जैसे आनंद का फव्वारा उनके भीतर बरस गया हो, उन्हें ऐसी अनुभूति हुई। इस तरह वे गुरु के कृपा पात्र बन गए।

आज्ञा का आराधन ही सर्वोच्च भक्ति है!

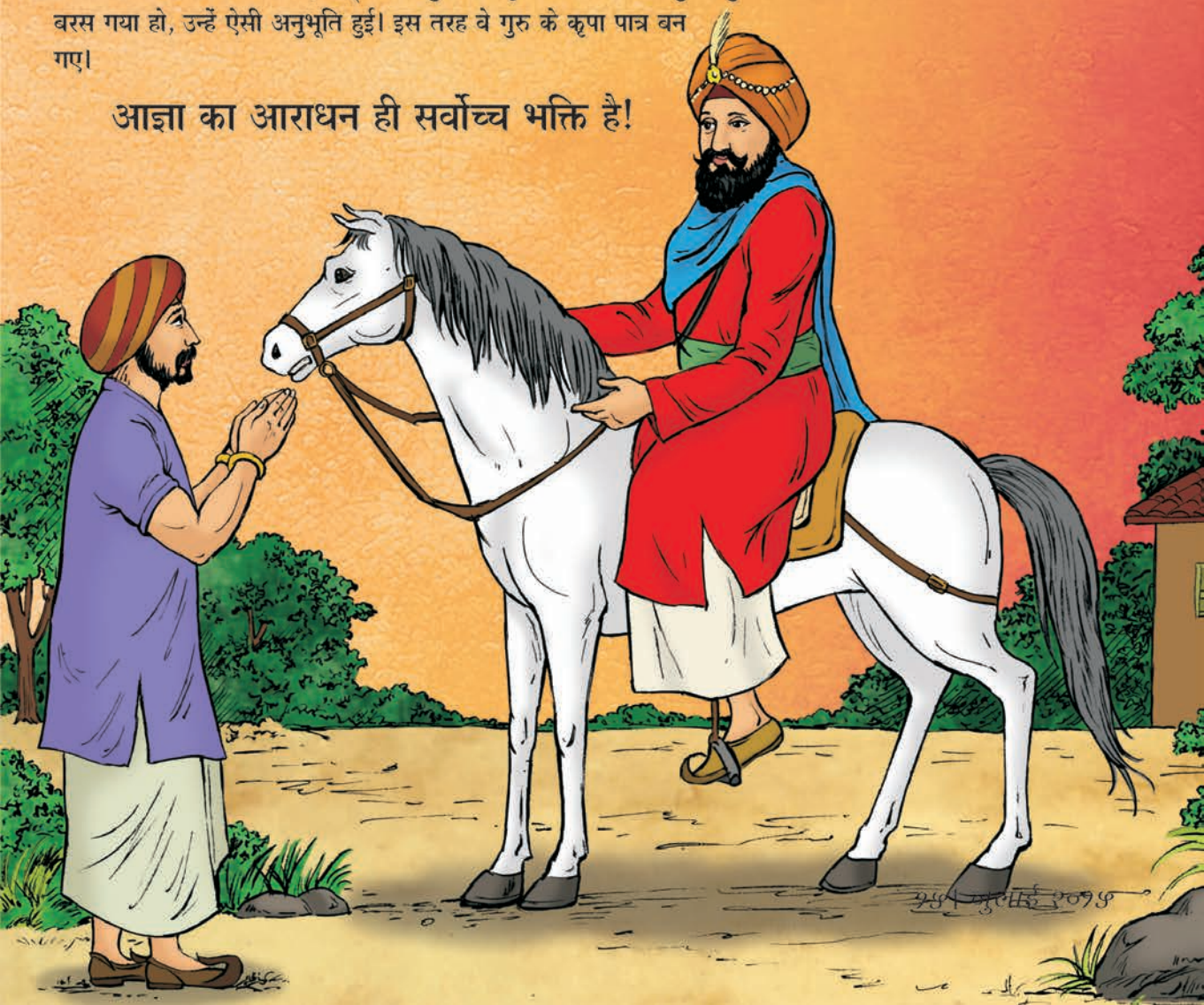

चलो खेलें...

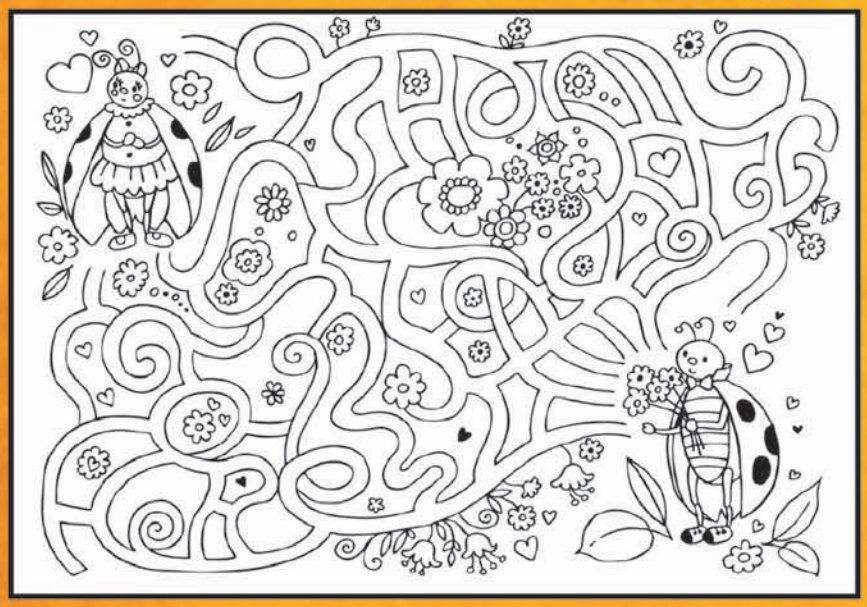

१.
रास्ता ढूँढो।

२.
पास में दी हुई दीयासलाईयों में से कोई भी ६ दीयासलाईयों को हिलाकर घर बनाईए।

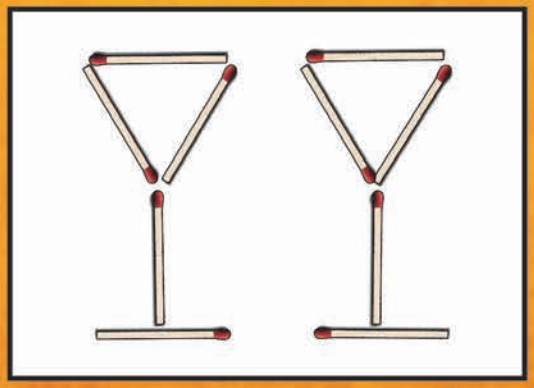

३.
शब्द-पहेली खेलो।

१२	+	११	+	७	=	
+		+		+		+
१८	+	१९	+	१६	=	
+		+		+		+
१२	+	१३	+	४	=	
=		=		=		=
	+		+		=	

४. नीचे दी गई खाली जगह को भरकर स्पेलिंग को पूर्ण करो।

_c_ cr_a_

u_ _r_l_a

p_n_i_

l_m_n

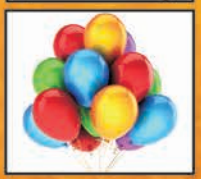

_al_o_

_a_ _ot

५. बिंदूओं को जोड़ों।

मीठी यादें

परम पूज्य दादाश्री के पास एक भाई आए थे। वे श्री कृष्ण भगवान के बहुत बड़े भक्त थे। वे भाई बहुत चिंता में रहते थे।

परम पूज्य दादाश्री ने उन्हें सिखाया कि हर रोज़ सुबह पाँच बार श्री कृष्ण भगवान के फोटो के सामने दोनों हाथ जोड़कर कहना कि, "हे भगवान, आपने कहा हैं कि तू एक भी चिंता मत कर फिर भी मुझ से चिंता हो जाती है तो मैं क्या करूँ? मेरी तो दृढ़ इच्छा है कि एक भी चिंता नहीं करूँ। इसलिए हे भगवान, ऐसी कृपा कीजिए, ऐसी शक्ति दीजिए कि फिर से चिंता न हो।"

फिर भी यदि चिंता हो तो फिर से भगवान से ऐसे विनती करना। यदि तुम्हारी नीयत साफ हो, और कृष्ण के सच्चे भक्त हो तो फिर चिंता कैसे हो सकती है? कृष्ण से हमें साफ-साफ कहने में क्या तकलीफ है? सच्ची भावनावाला भगवान से कह सकता है।

उस भाई ने आठ दिन तक रोज़ ऐसा किया और नौवें दिन वे परम पूज्य दादाश्री से आकर कहने लगे, "दादा, मुझ पर भगवान प्रसन्न हुए हैं। मेरी सभी चिंताएँ मिट गई हैं। अब मुझे एक भी चिंता नहीं होती।"

इस तरह भगवान की सच्ची भक्ति और ज्ञानी के वचनबल से उस भाई की समस्याएँ हल हो गई।

पज़ल के जवाब

१.

२.

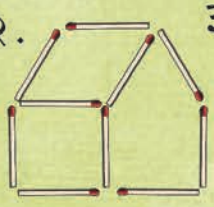

३.

१२	+	११	+	७	=	३०
+		+		+		+
१८	+	१९	+	१६	=	५३
+		+		+		+
१२	+	१३	+	४	=	२९
=		=		=		=
४२	+	४३	+	२७	=	११२

४.

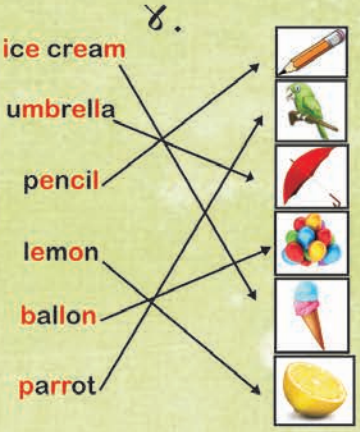

५.

और अंत में...

भक्ति अर्थात् क्या?

भक्ति जब खाने में जुड़ती है तब वह प्रसाद कहलाता है।

भक्ति जब सफर में जुड़ती है तब यात्रा कहलाती है।

भक्ति जब संगीत में जुड़ती है तब कीर्तन कहलाता है।

भक्ति जब घर में जुड़ती है तब मंदिर कहलाता है।

भक्ति जब कोई कार्य में जुड़ती है तब सेवा कहलाती है।

भक्ति जब भूख में जुड़ती है तब वह उपवास कहलाता है।

भक्ति जब पानी में जुड़ती है तब चरणामृत कहलाता है।

भक्ति जब मनुष्य में जुड़ती है तब मानवी कहलाता है।

Akram Express

July 2015
Year : 3, Issue : 4
Conti. Issue No.: 28

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

हिन्दी भाषी शिविर के दौरान हुई किड्स एक्टिविटि के फोटोस

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.